Class — T.D.C. Part III
Paper — VII
(Logic and Analysis)
Topic — वाक्य के अर्थ की कसौटियाँ (Criteria for sentence-meaning)

Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
R.N. College, Hajipur

वाक्य के अर्थ की कसौटियाँ
(Criteria for sentence-meaning)

प्रत्येक वाक्य की रचना उन शब्दों के द्वारा होती है जिनका कुछ-न-कुछ अर्थ होता है। किन्तु अर्थपूर्ण शब्दों का प्रत्येक समूह वाक्य नहीं होता। शब्दों का अर्थपूर्ण होना वाक्यों के अर्थपूर्ण होने का प्रमाण नहीं है। Hospers ने लिखा है —

"Word-meaning does not guarntee sentence-meaning."

उदाहरण के लिए, 'टेबुल गोल है' — यह एक अर्थपूर्ण वाक्य है क्योंकि इसकी रचना अर्थपूर्ण शब्दों के द्वारा हुई है। किन्तु 'टेबुल आगे पीछे दिन' — यह वाक्य नहीं है, जबकि इसमें प्रयुक्त प्रत्येक शब्द अर्थपूर्ण हैं। सार्थक शब्द मिलकर सार्थक वाक्य तभी बना सकते हैं जब उनके द्वारा किसी अभिकथन (Assertion) को व्यक्त किया जाता हो। अर्थहीन वाक्य के द्वारा सत्य या असत्य तर्कवाक्य की अभिव्यक्ति नहीं होती।

किसी भी वाक्य को अर्थपूर्ण होने के लिए उसके द्वारा कुछ शर्तों का पालन होना आवश्यक है, जिन्हें वाक्यार्थ की कसौटियाँ (Criteria for ~~sent~~ sentence-meaning) कहते हैं। वाक्य के अर्थ की अनेक कसौटियाँ होती हैं, किन्तु निम्नलिखित कसौटियों को महत्त्वपूर्ण माना गया है —

(1) <u>कल्पनीयता</u> (Imaginability) — कुछ विचारकों के अनुसार किसी वाक्य को सार्थक या अर्थपूर्ण होने के लिए उसमें कल्पनीयता का होना आवश्यक है। कोई भी वाक्य

अर्थपूर्ण तभी होगा, जब उस स्थिति की कल्पना की जा सके, जिसका वर्णन उस वाक्य के द्वारा किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, 'कुर्सी का रंग नीला है' — इस स्थिति की कल्पना की जा सकती है। अतः यह वाक्य अर्थपूर्ण है। 'दो पंखोंवाला एक मनुष्य यहाँ आया' — इस स्थिति की भी कल्पना की जा सकती है, भले-ही दो पंखों से युक्त मनुष्य का अस्तित्व नहीं हो। इसलिए यह वाक्य अर्थपूर्ण है।

बहुत-से ऐसे वाक्य होते हैं जिनके अर्थ की कल्पना नहीं की जा सकती। किन्तु इससे यह नहीं कहा जा सकता है कि वे वाक्य अर्थहीन हैं। उदाहरण के लिए, यदि कहा जाये 'श्याम बाबू ने प्रधानमंत्री राहत कोष में एक लाख पच्चीस हजार रुपये दिये' या 'घृणा बहुत बड़ा अवगुण है' तो इन वाक्यों में 'एक लाख पच्चीस हजार' रुपये की कल्पना नहीं की जा सकती या 'घृणा' जैसे भाव अकल्पनीय हैं। किन्तु इन वाक्यों को अर्थहीन नहीं कहा जा सकता। इससे स्पष्ट है कि यदि कल्पनीयता को वाक्यार्थ की कसौटी के रूप में स्वीकार किया जाये तो वाक्यार्थ आत्मनिष्ठ (Subjective) हो जाएगा क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की कल्पना अलग-अलग होती है।

(2) <u>वर्णनीयता</u> (Describability) — किसी वाक्य को तभी अर्थपूर्ण माना जा सकता है, जब उस स्थिति का वर्णन किया जा सके जो उसका दृष्टान्त या उदाहरण हो। उदाहरण के लिए, यदि यह कहा जाये कि 'जामुन खाना मधुमेह (ब्लड शूगर) के लिए लाभप्रद है', तो इस वाक्य की व्याख्या पर्यायवाची शब्दों के द्वारा की जा सकती है। कहने का अर्थ है कि शब्द में वर्णन करना तब लाभदायक होता है, जब दिये या कहे गये वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ अज्ञात हो और जिन शब्दों के द्वारा व्याख्या की गयी हो, उसके अर्थ ज्ञात हों।

फिर भी इस कसौटी में अनेक समस्याएँ हैं। सभी प्रकार की स्थितियों का वर्णन करना सदैव सम्भव नहीं होता। जैसे- मानसिक तनाव, क्रोध आदि की स्थितियाँ। इसके अतिरिक्त, इस कसौटी के द्वारा अर्थपूर्ण एवं अर्थहीन वाक्यों में भेद नहीं किया जा सकता।

(3) सत्यता की शर्तें (Truth-Conditions) — किसी भी वाक्य के अर्थपूर्ण होने के लिए उन शर्तों का जानना आवश्यक है जिनकी पूर्ति से वह वाक्य सत्य होता है। यदि यह कहा जाये कि किन शर्तों के अधीन कोई कथन सत्य होगा, तो उस कथन के अर्थ को जाना जा सकता है। उदाहरण के लिए, 'यह कलम नीला है' — यह कथन अर्थपूर्ण है, तो इसका मतलब है कि इस कथन के सत्य होने की शर्त है — कलम का नीला होना। इस प्रकार यदि किसी वाक्य के सत्य होने की शर्तों को जाना जाता है, तो वह वाक्य अर्थपूर्ण होगा।

यदि सत्यता की शर्तों को जानना ही वाक्य के अर्थपूर्ण होने की कसौटी हो, तो किसी भी वाक्य को फिर से दुहराकर उसे उस वाक्य के सत्यता की शर्त कहा जा सकता है। इस दृष्टि से कोई भी वाक्य अर्थहीन नहीं होगा तथा अर्थपूर्ण एवं अर्थहीन वाक्यों का अन्तर नहीं किया जा सकता।

(4) यह जानना कि यह किसके समान है (Knowing what it is like) — यदि यह कहा जाये कि 'सोमवार सो रहा है' या 'मछलियाँ चल रही हैं', तो इन कथनों से उनका तात्पर्य स्पष्ट नहीं हो पा रहा है। किन्तु इन कथनों को अर्थपूर्ण माना जा सकता है, यदि इनके बारे में यह बतला दिया जाये कि यदि ये कथन सत्य हों, तो ये किनके समान होंगे। ये कथन सत्य हैं या असत्य यह जानना आवश्यक नहीं है, किन्तु यह जानना आवश्यक

है कि यदि ये कथन सत्य होते, तो किसके समान होते।

वाक्य के अर्थ की कसौटी के लिए इस विचार में दो प्रमुख दोष हैं। सर्वप्रथम तो यह कि यदि कथन में प्रयुक्त शब्द का अर्थ अज्ञात हो, तो यह नहीं कहा जा सकता है कि यह किसके समान है। दूसरा प्रमुख दोष है कि बहुत-सी स्थितियों के समान कोई अन्य स्थिति नहीं होती। ये स्थितियाँ अनूठी होती हैं, जिनके विषय में यह नहीं कहा जा सकता है कि यदि वे सत्य हों, तो किनके समान होंगी।

वाक्य के अर्थ को निर्धारित करने की ये प्रमुख कसौटियाँ हैं।

———X———X———